वृषभ संक्रांति व्रत कथा PDF

पुरानी कथाओं के अनुसार यह मान्यता है कि प्राचीन समय में एक धरमदास नाम का एक व्यक्ति वैश्य रहा करता था वह बहुत ही बड़ा दानवीर था 1 दिन उसे कहीं से अक्षय तृतीय के बारे में पता चला उसे ज्ञात हुआ कि शुक्ल पक्ष की तृतीय तिथि पर सच्चे दिल से देवताओं की पूजा करने और ब्राह्मणों को दान देने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है उसी दिन से वह अक्षय तृतीया का व्रत पूर्ण विधि–विधान से करना शुरू कर देता है।

व्रत के दिन वह बहुत सी वस्तुओं का दान करता है जैसे – चना, गुड़, दूध, दही, इत्यादि वह जब यह सब कर रहा था तो उसकी पत्नी उसे यह सब करने से मना कर देती है परंतु उसने अपनी पत्नी की बात नहीं सुनी और पूर्ण श्रद्धा के साथ अक्षय तृतीय के व्रत को पूरा किया उसके कुछ समय पश्चात धरमदास की मृत्यु हो जाती है।

और ऐसा कहा जाता है कि उसका पुनर्जन्म राजा के रूप में हुआ वह पुनर्जन्म के बाद द्वारका की माटी नगर का राजा बना और यह बात सत्य हो गई थी अक्षय तृतीय व्रत करने से ही उसे इस फल की प्राप्ति हुई थी उसी दिन से वृषभ सक्रांति का दिन बहुत ही और पूजनीय है और जो भी व्यक्ति सच्चे दिल से यह व्रत करता है उसे मनचाही वस्तु की प्राप्ति होती है।

pdfinbox.com